प्रस्थापना, प्राक्कल्पना और सिद्धान्त के बीच अन्तर
(Difference between Proposition, Hypotheses and Theory)

प्रस्थापना

प्रस्थापना एक कथन होता है जो कि चरों या अवधारणाओं के बीच के सम्बन्धों को बताता है (ज़िकमुण्ड 1918:22)। रेनेक बेली (1978:40) कहता है कि यह एक या अधिक तथ्यों या घटनाओं के बीच सम्बन्धों का सामान्यीकृत विवरण होता है। व्यापार प्रबंधन प्रशासन में निम्नलिखित प्रस्थापना पर विचार करें। यदि सुदृढ़ीकरण समान रूप से वितरित अन्तराल के बाद किया जाता है और अन्य सभी स्थितियाँ सामान्य रहती है तो प्रयोगों की संख्या में वृद्धि में सकारात्मक विकास, परिणामी आदत में वृद्धि करेगा (ज़िकमण्ड op. cit. 22) यह प्रस्थापना सुदृढ़ीकरण की अवधारणा और आदत के बीच के सम्बन्धों को चिन्हित करती है, यह इस सम्बन्ध की दिशा एवं विस्तार को चिहिन्त करती है। जो प्रस्थापना एक चर की चर्चा करती है वह एकल (Univariate) प्रस्थापना कहलाती है (उदाहरणार्थ, होस्टल में रहने वाले लड़के अधिक धूम्रपान करते हैं)। द्विविध प्रस्थापना वह है जो दो चरों में सम्बन्ध जोड़े (जैसे अनिरक्षर स्त्रियाँ शिक्षित स्त्रियों की अपेक्षा ससुराल वालों द्वारा अधिक शोषित होती हैं) जो प्रस्थापना दो से अधिक चरों को जोड़े उसे बहुविध प्रस्थापना कहते हैं (जैसे, महिलाओं में जितनी अधिक निरक्षरता होगी उनका आत्मविश्वास उतना ही कमजोर होगा और पुरुषों द्वारा उनका शोषण भी अधिक होगा)।

बहुविध (Multivariate) प्रस्थापनाएँ सामान्यतः दो या दो से अधिक द्विविध (Bivariate) प्रस्थापनाओं के रूप में लिखी जाती हैं। उदाहरण के लिए उपरोक्त उदाहरण में दो द्विविध प्रस्थापनाएँ होंगी : (1) महिलाओं में जितनी अधिक निरक्षरता होगी उनका आत्मविश्वास उतना ही कम होगा, (2) स्त्रियों में आत्मविश्वास जितना कम होगा, उनका शोषण उतना ही अधिक होगा। इन दोनों प्रस्थापनाओं में से या तो दोनों अस्वीकार या स्वीकार किया जा सकता है या एक को स्वीकार और दूसरी को अस्वीकार किया जा सकता है। सामाजिक अनुसन्धान में अधिकतर प्रस्तावनाएँ द्विविध होती हैं।

जिस प्रकार अवधारणाएँ प्रस्थापनाओं का निर्माण करती हैं, उसी प्रकार प्रस्थापनाएँ, सिद्धान्तों का निर्माण करती हैं। प्रस्थापनाओं के उपप्रकारों में प्राक्कल्पनाएँ, अनुभूत सामान्यीकरण, अभिधारणाएँ और प्रमेय सम्मिलित होती हैं।

Scanned with CamScanner

प्राक्कल्पना

प्राक्कल्पना एक प्रस्थापना है जिसका अनुभव के आधार पर परीक्षण किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यह प्रस्थापना कि "गैर-नौकरीपेशा स्त्रियों की सामाजिक प्रस्थिति नौकरी पेशा स्त्रियों से निम्न होती है", अनुभव के आधार पर परीक्षण की जा सकती है। यहां स्त्रियों का नौकरीपेशा होना और सामाजिक प्रस्थिति, दो चर हैं जिनको मापा जा सकता है।

प्राक्कल्पना प्रस्थापना का एक अनुभवपरक प्रति-भाग है
(Hypothesis in Empirical Counterpart of Proposition)

प्रस्थापना

अमूर्त स्तर

अवधारणा A
(कार्यरत स्त्रियाँ)

अवधारणा B
उच्च प्रस्थिति

प्राक्कल्पना

अनुभवपरक स्तर

- गैर-कार्यरत स्त्रियाँ
- कार्यरत स्त्रियाँ

- परिवार में निर्णय लेने में सम्बद्ध
- अधिक स्वतंत्र
- अधिक आदरणीय
- कभी अलोचना नहीं होती।

बेली कैनेथ (1982:41) ने भी कहा है "प्राक्कल्पना परीक्षणीय स्वरूप में वर्णित वह प्रस्थापना है जो दो या दो से अधिक चरों के बीच के सम्बन्धों का पूर्वानुमान बतलाती है"। इसे कुछ तथ्यों के बीच सम्बन्धों को निश्चय पूर्वक बताने वाला एक अस्थाई कथन भी कहा जा सकता है।

उदाहरण के लिए सदरलैण्ड के विभेदी साहचर्य के सिद्धान्त (Theory of Differential Associations) जो कि अपराध के कारणों को बताता है, में प्रदत्त महत्त्वपूर्ण प्रस्थापना यह है कि अपराध, प्राथमिक समूहों के व्यक्तियों जो वैध-नियमों की परिभाषा प्रतिकूल के साथ संवाद की प्रक्रिया में सीखा गया व्यवहार है के रूप से करता है। यहाँ हम ये प्रश्न पूछ सकते हैं कि क्या अपराध परस्पर बातचीत से सीखा जाता है? क्या अपराध सीखने में अपराधियों के साथ परस्पर संबंध अधिक महत्त्वपूर्ण हैं? किस प्रकार और क्यों प्राथमिक समूहों में परस्पर संबंध अन्य समूहों (गौण समूहों) से भिन्न है? इन

Scanned with CamScanner